

## मूंग की खेती के तरीके

अभिरंजन कुमार

### सारांश: -

मूंग (विग्ना रेडिएटा) एक अल्पावधि की प्रमुख दलहनी फसल है, जिसे भारत में दाल, अंकुरित एवं हरी सब्जी के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह प्रोटीन, खनिज एवं विटामिन का समृद्ध स्रोत होने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक है क्योंकि इसकी जड़ों में सहजीवी जीवाणु द्वारा वायुमंडलीय नाइट्रोजन स्थिरीकरण होता है। मूंग की खेती खरीफ, रबी और ग्रीष्म—तीनों मौसमों में की जा सकती है तथा यह विभिन्न प्रकार की जलवायु और मिट्टी में अच्छी उपज देती है। उन्नत किस्मों के प्रयोग, उचित फसल चक्र एवं कीट-रोग प्रबंधन से इसकी उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। सतत कृषि और पोषण सुरक्षा की दृष्टि से मूंग की खेती किसानों के लिए लाभकारी विकल्प सिद्ध हो रही है।

**कुंजी शब्द (Keywords):** मूंग, दलहनी फसल, नाइट्रोजन स्थिरीकरण, पोषण सुरक्षा, खरीफ, ग्रीष्म, रबी।

**NEW ERA**  
AGRICULTURE MAGAZINE

### मूंग की खेती के तरीके:

मूंग (विग्ना रेडिएटा) फैबेसी की एक पादप प्रजाति है और इसे हरे चने के नाम से भी जाना जाता है। कभी-कभी यह काले चने (विग्ना मुंगो) के साथ उनके समान आकारिकी के कारण भ्रमित होता है, हालांकि वे दो अलग-अलग प्रजातियां हैं। हरा चना पीले फूलों और रोएँदार भूरे रंग की फलियों वाला एक वार्षिक बेल है। विग्ना रेडिएटा के तीन उपसमूह हैं, जिनमें एक खेती की जाने वाली (विग्ना रेडिएटा उपप्रजाति रेडिएटा) और दो जंगली (विग्ना रेडिएटा उपप्रजाति सबलोबाटा और

विग्ना रेडिएटा उपप्रजाति ग्लबरा) शामिल हैं। इसकी ऊंचाई लगभग 15-125 सेमी (5.9-49.2 इंच) होती है। मूंग की जड़ प्रणाली अच्छी तरह से विकसित होती है। पार्श्व जड़ें कई और पतली होती हैं, जिनमें जड़ की गांठें उगती हैं। तने बहुत शाखायुक्त होते हैं, कभी-कभी सिरों पर जुड़ जाते हैं। युवा तने बैंगनी या हरे होते हैं, और परिपक्व तने भूरे-पीले या भूरे रंग के होते हैं। उन्हें इरेक्ट सेस्पिटोस, सेमी-ट्रेलिंग और ट्रेलिंग प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। जंगली प्रकार आमतौर पर अधोमुखी

अभिरंजन कुमार

पीएच.डी. शोध छात्र, शस्य विज्ञान विभाग,  
एकेएस यूनिवर्सिटी, सतना (मध्य प्रदेश)

होते हैं जबकि खेती की जाने वाली किस्में अधिक सीधी होती हैं।



पत्तियां अंडाकार या चौड़ी-अंडाकार होती हैं, बीजपत्र निकलने के बाद मर जाते हैं, और दो एकल पत्तियों पर त्रिगुणित पत्तियां उत्पन्न होती हैं। पत्तियां 6-12 सेमी लंबी और 5-10 सेमी चौड़ी होती हैं। पीले फूलों वाले रेसमेस पत्तियों की धुरी और युक्तियों में पैदा होते हैं, जिनमें प्रति पेडीसेल 10-25 फूल होते हैं, जो स्व-परागण होते हैं। फल लम्बे बेलनाकार या सपाट बेलनाकार फली होते हैं, आमतौर पर प्रति पौधे 30-50 होते हैं। फली 5-10 सेमी लंबी और 0.4-0.6 सेमी चौड़ी होती है और इसमें 12-14 सेप्टम-अलग बीज होते हैं, जो आकार में बेलनाकार या गोलाकार हो सकते हैं, और हरे, पीले, भूरे या नीले रंग के हो सकते हैं। बीज के रंग और किसी खुरदरी परत की मौजूदगी या अनुपस्थिति का उपयोग विभिन्न प्रकार की मूंग की फलियों को अलग करने के लिए किया जाता है।

**सामान्य नाम-** मूंग दाल या मूंग बीन्स

**वानस्पतिक नाम:** *विगना रेडिएटा*

**उत्पत्ति:** भारत और मध्य एशिया

## परिचय:

- ☞ हरे चने को लोकप्रिय रूप से मूंग दाल के नाम से जाना जाता है।
- ☞ यह अंडाकार आकार का हरा रंग का बीज है।
- ☞ भारत मूंग का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है।
- ☞ इसकी खेती आमतौर पर पूरे भारत में की जाती है।
- ☞ भारत में इसे दाल के रूप में तथा साबुत दाल के रूप में खाया जाता है।

## पोषण:

- ☞ हरे चने में प्रोटीन भरपूर मात्रा में होता है।
- ☞ हरे चने में पर्याप्त मात्रा में फाइबर और आयरन पाया जाता है।
- ☞ हरे चने में फाइबर की मात्रा अधिक होने के कारण इसे पचाना बहुत आसान होता है।

## किस्मों:

मूंग की किस्मों को अब मुख्य रूप से कीटों और बीमारियों, विशेष रूप से बीन वीविल और मूंग बीन येलो मोजेक वायरस (MYMV) के प्रतिरोध के लिए लक्षित किया जाता है। अभी तक, मुख्य किस्मों में भारत में सम्राट, आईपीएम2-3, एसएमएल 668 और मेहा शामिल हैं; ऑस्ट्रेलिया में क्रिस्टल, जेड-एयू, सेलेरा-एयू, सैटिन II, रेगुर; चीन में झोंगलव नंबर 1, झोंगलव नंबर 2, जिल्व नंबर 2, जिल्व नंबर 7, वेइलव नंबर 4, जिहोंग 9218, जिहोंग 8937, बाओ 876-16, बाओ 8824-17। इसके अलावा, विश्व सब्जी केल मी विशिष्टतास में की सी विशेषताफल सु सुधार हुआ है।

**ग्रीष्म कल में उगाई जाने वाली मूंग दाल की प्रमुख फसल है। इसकी कम अवधि के कारण यह फसल प्रणालियों के बीच अच्छी तरह से फिट हो सकती हो**

सकती है। इसकी खेती मुख्य रूप से पूर्व एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप में की जाती ली जाती है।

## जलवायु:

- गर्म और आर्द्र वातावरण हरी चने की खेती के लिए उपयुक्त है।
- तापमान 25°C से 35°C के बीच होना चाहिए तथा मध्यम वर्षा भी आवश्यक है।
- दूसरी ओर जलभराव और बादल वाला मौसम फसल के लिए हानिकारक है।

## मौसम:

- मूंग मुख्यतः खरीफ मौसम की फसल है।
- मार्च-जून का समय मूंग की खेती के लिए काफी उपयुक्त है। हालाँकि, हरे चने की खेती तीनों मौसमों में आम है।

## मिट्टी:

- हरे चने की खेती के लिए अधिकतर प्रकार की मिट्टी उपयुक्त होती है।
- मिट्टी में जल निकासी की अच्छी क्षमता होनी चाहिए, उदाहरण के लिए, दोमट मिट्टी और रेतीली दोमट मिट्टी।
- लवणीय मिट्टी और जलभराव की स्थितियाँ मूंग की खेती के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

## उर्वरक और खाद:

- बुवाई के समय आवश्यक उर्वरक:
- फॉस्फोरस (पी 2 ओ 5): 25-40 किलोग्राम/हेक्टेयर नाइट्रोजन (एन): 25 किग्रा/हेक्टेयर
- मिट्टी की तैयारी के समय 10 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की मात्रा में गोबर की खाद मिट्टी में मिलानी चाहिए।

## रोग और कीट प्रबंधन:

| रोग/कीट                       | पहचान                         | नियंत्रण  |
|-------------------------------|-------------------------------|---|
| मूंग येलो मोज़ेक वायरस (MYMV) | पत्तियों पर पीले धब्बे        | रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन, सफेद मक्खी नियंत्रण |
| लीफ स्पॉट                     | पत्तियों पर धब्बे             | कार्बेन्डाजिम या मैनकोजेब का छिड़काव              |
| थ्रिप्स व एफिड्स              | पत्तियों की सिकुड़न, रस चूसना | नीम तेल या इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव              |

## भूमि की तैयारी:

- खेत की तैयारी में 1 से 2 जुताई की आवश्यकता होती है।
- भूमि खरपतवार से मुक्त होनी चाहिए और अच्छी तरह समतल होनी चाहिए।
- पिछली फसल की कटाई के बाद ग्रीष्मकालीन फसल के लिए तत्काल सिंचाई की आवश्यकता होती है।
- गर्मी के मौसम में प्लांकिंग की भी आवश्यकता होती है; इससे मिट्टी से नमी की हानि को रोकने में मदद मिलेगी।



## पौधों के बीच की दूरी:

- रबी और ग्रीष्म ऋतु में पौधों के बीच आवश्यक दूरी- 30×10 सेमी.



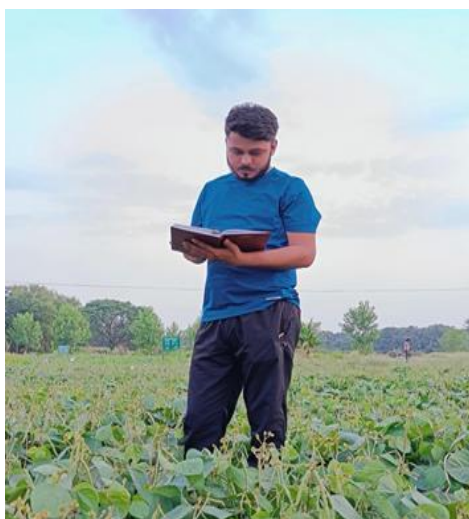
- ✶ खरीफ मौसम में पौधों के बीच आवश्यक दूरी- 45×10 सेमी.

## बीज दरें:

- ✶ खरीफ मौसम- 12 से 16 किग्रा/हेक्टेयर।
- ✶ रबी और ग्रीष्म ऋतु- 20 से 25 किग्रा/हेक्टेयर।
- ✶ यह अनुशंसा की जाती है कि बीज को कम से कम 5 से 7 सेमी की गहराई पर बोया जाना चाहिए।

## कृषक हित में सुझाव:

- ✶ मूंग को अन्य फसलों के साथ अंतरफसली (Intercropping) या फसल चक्र (Crop Rotation) के रूप में शामिल करें जैसे:
- मूंग + मक्का
- मूंग + गन्ना
- मूंग + मूँगफली



इससे भूमि की उर्वरता बनी रहती है और कीट प्रकोप भी कम होता है।

## विविधता:

- ✶ CO 1- इस किस्म की अवधि 135 दिन है। यह लम्बी अवधि वाली है तथा वर्षा आधारित भूमि के लिए भी उपयुक्त है।

- ✶ एडीटी 1- इस किस्म की अवधि 80 दिन है। यह चावल की परती भूमि के लिए उपयुक्त है।
- ✶ जेजीजी 1- इस किस्म की अवधि 65 दिन है। यह सूखे की स्थिति में भी जीवित रह सकती है।
- ✶ केएम 1- इस किस्म की अवधि 65 से 70 दिन है। यह YMV और फली छेदक के प्रति सहनशील है।
- ✶ K1- इस किस्म की अवधि 70 से 75 दिन है। यह सूखे की स्थिति के प्रति प्रतिरोधी है।

## सिंचाई:

- ✶ चूंकि यह वर्षा आधारित फसल है, इसलिए अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती।
- ✶ इस फसल के लिए जल निकासी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जलभराव के प्रति बहुत संवेदनशील है।
- ✶ ग्रीष्म ऋतु में 5 से 6 सिंचाई की आवश्यकता होती है।
- ✶ 12-15 दिनों के अंतराल पर बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।
- ✶ सिंचाई के लिए शीघ्र फली भरना और देर से फूल आना बहुत महत्वपूर्ण चरण हैं।



## उपज:

- ✶ खरीफ मौसम के लिए- 600-700 किग्रा/हेक्टेयर।

गु के लिए- 1100-1300 किग्रा/हेक्टेयर।



## निष्कर्ष :

मूंग (विग्ना रेडिएटा) एक अत्यंत महत्वपूर्ण दलहनी फसल है, जो न केवल किसानों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी है, बल्कि पोषण की दृष्टि से भी बहुत समृद्ध है। यह एक बहुउपयोगी फसल है जिसे दाल, अंकुरित बीज, और हरी सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है। इसकी खेती भारत और दक्षिण एशिया के अनेक भागों में की जाती है, विशेष रूप से कम समय में पकने वाली किस्मों के कारण यह ग्रीष्मकालीन, खरीफ और रबी—तीनों मौसमों में उगाई जा सकती है।

कम पानी और उर्वरक में भी अच्छी उपज देती है।

भूमि की उर्वरता बढ़ाने में सहायक है, क्योंकि यह वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करती है।

नवीन किस्मों और तकनीकों के प्रयोग से मूंग की उत्पादकता में निरंतर वृद्धि हो रही है। साथ ही, यह किसानों को कम समय में अधिक लाभ देने वाली फसलों में से एक बन चुकी है। सतत कृषि के लिए मूंग की खेती को बढ़ावा देना न केवल कृषि क्षेत्र के लिए, बल्कि जनस्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

## संदर्भ (References)

1. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR). 2022. दलहनी फसलों की उन्नत खेती की तकनीक. नई दिल्ली।
2. चौधरी, बी.डी. एवं सिंह, ए.के. 2019. दलहनी फसलों का उत्पादन एवं संरक्षण. कृषि प्रकाशन, जयपुर।
3. अफरीन, एस., कुमार, ए., कुमार, एम., कुमार, ए., एवं सिंह, पी.के. (2021)।



मूंग की खेती:

जलवायु और मिट्टी की दृष्टि से लचीलापन रखती है।

4. कुमार, एन. एवं शर्मा, वी.के. 2020. मूंग की उन्नत उत्पादन तकनीक. कृषि प्रसार सेवा, मध्य प्रदेश।